International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-10, Issue-3 May-June-2023
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के आयामों का अध्ययन

तरूणा शर्मा [1*] डा0सुरक्षा बंसल [2]**
शोधार्थी [1*] शोध निर्देशिका [2**]
स्कूल ऑफ एजूकेशन [1,2,] शोभित इन्स्टीट्यूट ऑफ इन्जीनियरिंग एण्ड टैक्नोलॉजी
(डीम्ड–टू–बी यूनिवर्सिटी) एन.एच. 58, मोदीपुरम (मेरठ), इण्डिया।

सरांश

भारतवर्ष के माध्यमिक स्कूलों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की आयु 11-17 वर्ष तक होती है। अर्थात् आयु का वह काल जिसमें केवल चिन्गारी दिखाने की आवष्यकता होती है। इस अवस्था को किशोरावस्था के नाम से पुकारा जाता है। जिसके सम्बन्ध में स्टेनली हाल ने कहा है कि किशोरावस्था अत्यन्त दबाव, तनाव तूफान और संघर्ष की अवस्था है। इसीलिये माध्यमिक स्कूलों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की ऊर्जा उचित कार्यों में, समाज की सेवा में, देश की प्रगति में, देश की उन्नति में, तथा शिक्षा के प्रति शैक्षिक रुचि उत्पन्न करने में तथा उनके व्यक्तित्व के विकास में प्रयोग की जा सकती है। माध्यमिक स्कूलों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण में कैसे लगाया जाय, जिससे वे देश की उन्नति में भागीदार बन सके। शोधार्थी ने इसी समस्या को आधार मानते हुए शीर्षक **'माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के आयामों का अध्ययन'** अन्तर्गत शोध कार्य किया। इस शोध कार्य को मेरठ शहर के माध्यमिक विद्यालयों के 100 विद्यार्थियों पर किया गया तथा इस शोध के आधार पर यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के आयामों पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

कीवर्ड्स– व्यक्तित्व, आयाम।

प्रस्तावना

भारतीय शिक्षा का इतिहास बहुत ही प्राचीन है जिसमें शिक्षा के स्वास्थ का वर्णन हमे **'वेदों'** में मिलता है। प्राचीन काल में शिक्षा द्वारा बालक के सर्वांगीण विकास पर बल दिया जाता था। उसी प्रकार आज आधुनिक शिक्षा भी बालक के सर्वांगीण विकास पर बल देती है। बालक का सर्वांगीण विकास विद्यालय की चारदीवारी के अन्दर सम्भव नहीं है। बालक का सर्वांगीण विकास तभी सम्भव है, जब उसके व्यक्तित्व आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर उसे शिक्षित किया जाय। वर्तमान शिक्षा में माध्यमिक स्तर की शिक्षा का विशेष महत्त्व है, जिसमें अधिगमकर्ता पर विशेष ध्यान दिया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी उच्च शिक्षा से पूर्व की शिक्षा पर विशेष ध्यान देते हुये कहा गया है कि राष्ट्र के भविष्य का निर्माण उसकी कक्षाओं में हो रहा है अतः माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों की विशेषताओं पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। माध्यमिक विद्यालयों में सम्पूर्ण देश में 10+2 की सरंचना लागू है। माध्यमिक विद्यालयों में भौतिक सुविधायें शिक्षक, पाठयक्रम, सरंचना, समान होने पर भी विद्यार्थी शिक्षा में एक समान रूचि नहीं लेते है। जिसका उनके व्यक्तित्व कारकों पर विशेष प्रभाव पड़ता है।

शोध समस्या कथन

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के आयामों का अध्ययन।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त तकनीकी शब्दों का स्पष्टीकरण

माध्यमिक स्तर

माध्यमिक शिक्षा से तात्पर्य कक्षा 9 से 12 तक शिक्षा ग्रहण करने वाले बालकों से है। कक्षा 9 एवं कक्षा 10 उच्च माध्यमिक तथा कक्षा 11 व 12 उच्चतर माध्यमिक स्तर कहा जाता है। अतः कक्षा 9 से कक्षा 12 तक की शिक्षा देने वाले विद्यालयों को उच्चतर माध्यमिक विद्यालय कहा जाता है। (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के अनुसार)

माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952-53) के अनुसार– 'वह शिक्षा जो कि प्राथमिक शिक्षा पूरी होने के बाद व महाविद्यालय शुरू होने से पहले समाप्त होती है उसे माध्यमिक शिक्षा कहते है।' इस प्रकार की शिक्षा 11-17 वर्ष के बच्चों को प्रदान की जाती है।

व्यक्तित्व के आयाम

व्यक्तित्व शब्द का प्रयोग साधारण बातचीत के दौरान बहुतायत से किया जाता है। साधारण बातचीत मे प्रयुक्त व्यक्तित्व शब्द किसी ऐसे गुण या विशेषता को इंगित करता है जिसे सभी व्यक्ति विभिन्न परिस्थितयों में व्यवहार करने तथा पारस्परिक सम्बन्धों की दृष्टि से विशेष महत्त्व देते है, सामान्य अर्थों में व्यक्तित्व से तात्पर्य शारीरिक गठन रंग रूप वेश भूषा बातचीत के ढंग, कार्य व्यवहार तथा विभिन्न गुणों के संयोजन से लगाया जाता है। व्यक्तित्व शब्द अंग्रेजी पर्याय पर्सनालिटी (Personality) शब्द लेटिन भाषा के शब्द पर्सोना (Persona) से बना है जिसका अर्थ मुखोटा है। व्यक्तित्व व्यक्ति के विचारों, अभिवृत्तियों एवं मूल्यों का योग है।

ऑलपोर्ट (1948) के अनुसार, 'व्यक्तित्व व्यक्ति में उन मनोदैहिक व्यवस्थाओं का गतिशील संगठन है जो कि वातावरण के साथ उसके अपूर्व समायोजन का निर्धारण करता है।

मनोवैज्ञानिको ने मनोवैज्ञानिक लक्षणों के आधार पर व्यक्तित्व का वर्गीकरण किया है इसमें जुंग (Jung) का वर्गीकरण सबसे अधिक मान्य है उन्होने अपनी पुस्तक 'Psychological Type' में व्यक्तित्व के निम्न दो प्रकार बताये है–

1. **अन्तर्मुखी (Introvert)–** अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के लक्षण, स्वभाव, आदतें, अभिवृतियाँ और अन्य चालक वाह्य रूप में प्रकट नहीं होते हैं। इसलिये ऐसे व्यक्तियों को अन्तर्मुखी कहा जाता है। इनका विकास वाह्य रूप से न होकर आन्तरिक रूप से होता है।
2. **बहिर्मुखी (Extrovert)–** बहिर्मुखी व्यक्तित्व के मनुष्य अन्तर्मुखी व्यक्तित्व वाले मनुष्यों से विपरीत स्वभाव के होते हैं। इस प्रकार के व्यक्तित्व वाले व्यक्तियों का झुकाव वाह्य तत्वों की ओर होता है। ये संसार के भौतिक और सामाजिक लक्ष्यों में विशेष रूचि रखते हैं। वे विचारों और भावनाओं को स्पष्ट रूप से व्यक्त कर सकते हैं।

शोधार्थी ने अपने शोध अध्ययन हेतु जुंग द्वारा वर्गीकृत दोनों प्रकार के व्यक्तित्व आयामों अन्तर्मुखी एवम् बहिर्मुखी को आधार माना है।

अध्ययन के चर

प्रस्तुत अध्ययन में दो प्रकार के चरों को समावेशित किया गया है–

1. व्यक्तित्व (अन्तर्मुखी– बहिर्मुखी)

प्रस्तुत शोध के उद्देश्य

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी व्यक्तित्व का अध्ययन।
2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों के अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी व्यक्तित्व का अध्ययन।
3. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्राओं के अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी व्यक्तित्व का अध्ययन।
4. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के अन्तर्मुखी व्यक्तित्व का अध्ययन।
5. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के बहिर्मुखी व्यक्तित्व का अध्ययन।

प्रस्तुत शोध की परिकल्पनायें

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी व्यक्तित्व में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों के अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी व्यक्तित्व में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्राओं के अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी व्यक्तित्व में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के अन्तर्मुखी व्यक्तित्व में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
5. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के बहिर्मुखी व्यक्तित्व में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

प्रस्तुत शोध का सीमांकन

1. प्रस्तुत शोध कार्य मेरठ शहर के पाँच माध्यमिक विद्यालयों तक ही सीमित किया गया है।
2. प्रस्तुत शोध अध्ययन में केवल कक्षा 10 के विद्यार्थियों को ही लिया गया है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन की शोध विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

प्रस्तुत शोध अध्ययन का न्यादर्श

यादृच्छिक पद्धति द्वारा शोधकर्ता ने मेरठ शहर के माध्यमिक विद्यालयों को शोध की जनसंख्या मानते हुए, सभी विद्यालयों की एक सूची बनाकर, उसमें से 05 विद्यालयों का चयन यादृच्छिक 'लॉटरी' विधि से कर लिया। अब चयनित विद्यालयों से इसी विधि द्वारा 100 विद्यार्थियों का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन के शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध हेतु दो प्रमापीकृत शोध उपकरण प्रयुक्त किए गए– डॉ. यशवीर सिंह एवं डॉ. हर मोहन सिंह द्वारा निर्मित व्यक्तित्व प्रश्नावली मापनी।

प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त सांख्यिकीय

शोध कार्य में विश्वसनीय परिणाम निश्चित करने हेतु उच्च एवं विश्वसनीय सांख्यिकीय प्रविधि के रूप में मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया।

आँकड़ों का सारणीयन एवं विश्लेषण

उद्देश्य–1.0 माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के अर्न्तमुखी–बहिर्मुखी व्यक्तित्व का अध्ययन।

परिकल्पना–1.0 माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के अर्न्तमुखी–बहिर्मुखी व्यक्तित्व में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका सं0–1

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी व्यक्तित्व का अध्ययन

व्यक्तित्व	अन्तर्मुखी विद्यार्थी (50)		बहिर्मुखी विद्यार्थी (50)		टी मूल्य	सार्थकता स्तर .05
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन		
व्यक्तित्व	38.63	2.36	39.17	2.32	1.15	असार्थक

तालिका सं0 01 में प्राप्त आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण द्वारा परिकलित टी–मूल्य **1.15** प्राप्त हुआ। जो सार्थकता के 0.05 स्तर पर स्वतन्त्रता के अंश 98 पर सारणी में दिए गए टी– मूल्य के मान 0.05 पर 1.96 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना 'माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी व्यक्तित्व में कोई सार्थक अन्तर नहीं है' स्वीकृत की जाती है। विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के अर्न्तमुखी–बहिर्मुखी व्यक्तित्व में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

उद्देश्य–1.1 माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों के अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी व्यक्तित्व का अध्ययन।

परिकल्पना–1.1 माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों के अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी व्यक्तित्व का अध्ययन।

तालिका सं0–1.2

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों के अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी व्यक्तित्व का अध्ययन

व्यक्तित्व	अन्तर्मुखी छात्र (25)		बहिर्मुखी छात्र (25)		टी मूल्य	सार्थकता स्तर .05
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन		
व्यक्तित्व	38.39	1.99	39.12	2.37	1.18	असार्थक

तालिका सं0 02 में प्राप्त आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण द्वारा परिकलित टी–मूल्य **1.18** प्राप्त हुआ। जो सार्थकता के 0.05 स्तर पर स्वतन्त्रता के अंश 98 पर सारणी में दिए गए टी– मूल्य के मान 0.05 पर 1.96 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना 'माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों के अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी व्यक्तित्व में कोई सार्थक अन्तर नहीं है' स्वीकृत की जाती है। विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों के अर्न्तमुखी–बहिर्मुखी व्यक्तित्व में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

उद्देश्य–1.3 माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्राओं के अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी व्यक्तित्व का अध्ययन।

परिकल्पना–1.3 माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्राओं के अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी व्यक्तित्व का अध्ययन।

International Journal of Education and Science Research Review
Volume-10, Issue-3 May-June-2023 E-ISSN 2348-6457 P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

तालिका सं0–1.3

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्राओं के अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी व्यक्तित्व का अध्ययन

व्यक्तित्व	अन्तर्मुखी छात्राओं (25)		बहिर्मुखी छात्राओं (25)		टी मूल्य	सार्थकता स्तर ण05
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन		
व्यक्तित्व	39.18	2.32	38.81	1.95	0.61	असार्थक

तालिका सं0 03 में प्राप्त आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण द्वारा परिकलित टी–मूल्य **0.61** प्राप्त हुआ। जो सार्थकता के 0.05 स्तर पर स्वतन्त्रता के अंश 98 पर सारणी में दिए गए टी– मूल्य के मान 0.05 पर 1.96 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना 'माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्राओं के अन्तर्मुखी–बहिर्मुखी व्यक्तित्व में कोई सार्थक अन्तर नहीं है' स्वीकृत की जाती है। विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं के अर्न्तमुखी–बहिर्मुखी व्यक्तित्व में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

उद्देश्य–1.4 माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्राओं के अन्तर्मुखी व्यक्तित्व का अध्ययन।

परिकल्पना–1.4 माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्राओं के अन्तर्मुखी व्यक्तित्व का अध्ययन।

तालिका सं0–1.4

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के अन्तर्मुखी व्यक्तित्व का अध्ययन

व्यक्तित्व	अन्तर्मुखी छात्र (25)		अन्तर्मुखी छात्राओं (25)		टी मूल्य	सार्थकता स्तर .05
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन		
व्यक्तित्व	38.39	1.99	39.18	2.32	1.29	असार्थक

तालिका सं0 04 में प्राप्त आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण द्वारा परिकलित टी–मूल्य **1.29** प्राप्त हुआ। जो सार्थकता के 0.05 स्तर पर स्वतन्त्रता के अंश 98 पर सारणी में दिए गए टी– मूल्य के मान 0.05 पर 1.96 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना 'माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के अन्तर्मुखी व्यक्तित्व में कोई सार्थक अन्तर नहीं है' स्वीकृत की जाती है। विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के अन्तर्मुखी व्यक्तित्व में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

उद्देश्य–1.5 माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्राओं के बहिर्मुखी व्यक्तित्व का अध्ययन।

परिकल्पना–1.5 माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्राओं के बहिर्मुखी व्यक्तित्व का अध्ययन।

तालिका सं0–1.5

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के बहिर्मुखी व्यक्तित्व का अध्ययन

व्यक्तित्व	बहिर्मुखी छात्र (25)		बहिर्मुखी छात्राओं (25)		टी मूल्य	सार्थकता स्तर .05
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन		
व्यक्तित्व	39.12	2.37	38.81	1.95	0.50	असार्थक

तालिका सं0 05 में प्राप्त आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण द्वारा परिकलित टी–मूल्य **0.50** प्राप्त हुआ। जो सार्थकता के 0.05 स्तर पर स्वतन्त्रता के अंश 98 पर सारणी में दिए गए टी– मूल्य के मान 0.05 पर 1.96 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना 'माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के बहिर्मुखी व्यक्तित्व में कोई सार्थक अन्तर नहीं है' स्वीकृत की जाती है। विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के बहिर्मुखी व्यक्तित्व में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

व्यक्तित्व के विकास हेतु कुछ महत्वपूर्ण सुझाव

प्रस्तुत शोध से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर हम कह सकते है कि छात्रों को सीखने में उनके दृष्टिकोणों, अभिवृत्तियों, अभिव्यक्तियों एवं प्रवृत्तियों का व्यक्तित्व सम्बन्धी विशेषताओं के निर्माण में सहायक होती है। यह उनके व्यक्तित्व के निर्माण की दिशा भी निर्देशित करती है। विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के विकास हेतु कुछ महत्वपूर्ण सुझाव सहायक सिद्ध हो सकते है, जो निम्नलिखित है–

- पाठ्यक्रम को आकर्षक एवं रुचिपूर्ण बनाना चाहिए।
- शिक्षण कार्यो के साथ–साथ पाठ्य सहगामी क्रियाओं पर भी अवश्य ध्यान देना चाहिए।
- पाठ्यक्रम में शिक्षण का क्रम सरल से कठिन स्तर की ओर होना चाहिए।
- छात्रों का मानसिक स्तर जाँच कर शिक्षण कार्य प्रारम्भ करना चाहिए।
- नयी–नयी शिक्षण पद्धतियों का प्रयोग करके शिक्षण कार्य को सम्पन्न करना चाहिए।
- छात्रों के सम्मुख आने वाली समस्याओं का निराकरण करते रहना चाहिए।

सन्दर्भग्रन्थ सूची–

- हॉल जी. एस. (1904) 'एडोल्सेन्स इटस साइकॉलोजी एण्ड इट्स रिलेशन्स टू फिजियोलोजी एन्थ्रोपोलोजी सेक्स क्राइम रिलिजन एण्ड ऐजुकेषन (वॉल्यू. I & II) न्यूयॉर्क डी. ऐप्लेटन एण्ड क0।
- क्रो एल.डी. एण्ड क्रो (1998) 'एजूकेशनल साइकोलोजी', न्यूयार्क अमेरिकन बुक कम्पनी।
- झा बी.एस.(1946) 'मॉडर्न ऐजुकेशनल साइकोलॉजी (रिवाइज्ड) इलाहाबाद इण्डियन प्रेस लि0
- ऑलपोर्ट जी. डब्लू. (1948) 'पर्सनाल्टी–ए साइकोलॉजी इंटरप्रिटेशन', न्यूयार्कः हाल्ट।

- गुड कार्टर वी० (1959) 'डिक्शनरी ऑफ एजूकेशन' (सेकेण्ड एडिशन) न्यूयार्कः मैक्ग्रा–हिल बुक क0।
- जुंग सी. जी. (1971) 'साइकोलॉजिकल टाइप, कलेक्टेड वर्क्स ऑफ सी. जी. जुंग', वोल्यूम 6, प्रिंसटन, एन.जे. प्रिंसटन यूनिवर्सिटी।
- कार्टर वी.गुड (1993) 'डिक्शनरी ऑफ एजुकेशन, न्यूयार्कः मैक्ग्रा– हिल बुक कं0. एडिशन टोकियो एम. एल. ग्रो हिल कोगाकुशा लि0।
- कृष्णा, के. पी. (1980) 'पर्सनालिटी डाइमेंशन ऑफ टुरुन्ट्स', सोशल डिफेंस, 16,2,37-41
- मुदालियर आयोग (माध्यमिक शिक्षा आयोग) 1952-53
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020